कविवर पंडित संतलालजी कृत

सप्तम पूजा

512
गुण सहित

श्री सिद्धचक्र विधान पूजा

तीर्थधाम
ढाईद्वीप जिनायतन

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

छप्पय

ऊरध अधो सु रेफ सबिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे।
वर्ग्गनिपूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधिधर,
अग्रभाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर।।
पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नाग को।
ह्वै केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्तविराजमान श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्!
अत्रावतरावतर संवौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

दोहा

सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्मरहित निरोग।
सिद्धचक्र सो थापहूं, मिटै उपद्रव योग।।

(इति यंत्रस्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(चाल बारहमासा)

सुर मणि-कुम्भ क्षीर भर धारत, मुनि मन-शुद्धप्रवाह बहावहिं।
हम दोऊ विधि लाइक नाहीं, कृपा करहु लहि भवतट भावहिं।।
शक्ति सारु सामान्य नीर सों, पूजूँ हूँ शिव-तिय के स्वामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशत-गुणसहिताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
जन्मजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल बारहमासा)

नतु कोऊ चंदन नतु कोऊ केसरि, भेंट किये भवपार भयो है।
केवल आप कृपा-दृग ही सों, यह अथाह दधि पार लयो है।।
रीति सनातन भक्तन की लख, चंदन की यह भेंट धरामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल बारहमासा)

इन्द्रादिक पद हूँ अनवस्थित, दीखत अन्तर रुचि न करैं हैं।
केवल एकहि स्वच्छ अखण्डित, अक्षय पद की चाह धरैं हैं।।
तातैं अक्षत सों अनुरागी हूँ सो तुम पद पूज करामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र जयतु

(चाल बारहमासा)

पुष्प-बाण सो ही मन्मथ-जग, विजई जग में नाम धरावे।
देखहु अद्भुत रीति भक्त की, तिसहि भेंट धर काम हनावे।।
शरणागत की चूक न देखी, तातैं पूज्य भये शिरनामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल बारहमासा)

हनन असाता पीर नहीं यह भीर परै चरु भेंटन लायो।
भक्त अभिमान भेंट हो स्वामी, यह भवकारण भाव सतायो।।
मम उद्यम करि कहा आप ही, सो एकाकी अर्थ लहामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल बारहमासा)

पूरण ज्ञानानन्द ज्योति घन, विमल गुणातम शुद्ध स्वरूपी।
हो तुम पूज्य ये हम पूजक, पाय विवेक प्रकाश अनूपी।।
मोह अन्ध विनसो तिह कारण, दीपन सों अर्चूं अभिरामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल बारहमासा)

धूप भरैं उधरें प्रजरें मणि, हेम धरें तुम पद पर वारूँ।
बार बार आवर्त जोरि करि, धार धार निज शीश न हारूँ।।
धूम्र धार सम तन रोमांचित, हर्ष सहित अष्टांग नमामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल बारहमासा)

तुम हो वीतराग निज पूजन, बंदन थुति परवाह नहीं है।
अरु अपने समभाव वहै कछु, पूजा फल की चाह नहीं है।।
तौ भी यह फल पूजि फलद, अनिवार निजानंद कर इच्छामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल बारहमासा)

तुम-से स्वामी के पद सेवत, यह विधि दुष्ट रंक कहा कर है।
ज्यों मयूरध्वनि सुनि अहि निजबिल, विलय जाय छिन बिलम न धर है।।
तातैं तुम पद अर्घ उतारण, विरद उचारण करहुँ मुदामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिगीतिका

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमैं चरु, प्रचुर स्वाद सुविधि घनी।।
वर दीप माल उजाल धूपायन, रसायन फल भले।
करि अर्घ सिद्ध-समूह पूजत, कर्मदल सब दलमले।।
ते क्रमावर्त नसाय युगपत, ज्ञान निर्मलरूप हैं।
दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप हैं।।
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिव कमलापती।
मुनि ध्येय सेय अमेय, चहुँ गुण गेह, द्यो हम शुभमती।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशाधिकपंचशतगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने पूर्णपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र जयतु

जयमाला

दोहा

रत्नत्रय भूषित महा, पंच सुगुरु शिवकार।
सकल सुरेन्द्र नमें नमूँ, पाऊँ सो गुणसार।।

पद्धरी

जय महा मोहदल दलन सूर, जय निर्विकल्प आनन्द-पूर।
जय द्वैविधि कर्म विमुक्त देव, जय निजानन्द स्वाधीन एव।।
जय संशयादि भ्रमतम निवार, जय स्वामिभक्ति द्युतिथुति अपार।
जय युगपत सकल प्रत्यक्ष लक्ष, जय निरावरण निर्मल अनक्ष।।

जय जय जय सुखसागर अगाध, निरद्वन्द्व निरामय निर-उपाधि।
जय मनवचतन व्यापार नाश, जय थिर सरूप निज पद प्रकाश।।
जय पर-निमित्त सुख-दुख निवार, निरलेप निराश्रय निर्विकार।
निज में पर को पर में न आप, परवेश न हो नित निर-मिलाप।।
तुम परम धरम आराध्य सार, निज सम करि कारण दुर्निवार।
तुम पंच परम आचार युक्त, नित भक्त वर्ग दातार मुक्त।।
एकादशांग सर्वांग पूर्व, स्वै-अनुभव पायो फल अपूर्व।
अंतर-बाहिर परिग्रह नसाय, परमारथ साधु पद लहाय।।

हम पूजत निज उर भक्ति ठान, पावें निश्चय शिवपद महान।
ज्यों शशि किरणावलि सियर पाय, मणि चंद्रकांति द्रवता लहाय।।

घतानन्द

जय भव-भयहारं, बन्ध-बिडारं, सुख-सारं शिव-करतारं।
नित 'संत' सु ध्यावत, पाप नसावत, पावत पद निज अविकारं।।

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपंचशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

तुम गुण अमल अपार, अनुभवतें भव-भय नशै।
'सन्त' सदा चित धार, शांति करो भव-तप हरो।।

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

यहाँ 108 बार
ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः
मन्त्र का जाप्य करें।